बाप समान फरिश्ता वर्ष

पाना था सो पा लिया

02.12.2012

1. **स्वमान** – मैं पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच – ``हर एक बच्चे के चेहरे पर चमकता हुआ भाग्य दिखाई दे रहा है...मस्तक में लाइट की प्राप्ति चमक रही है...हाथों में ज्ञान का भण्डार दिखाई दे रहा है...पांव में कदम में पदम दिखाई दे रहा है...ऐसा भाग्य हरेक के चेहरे में चमक रहा है...ऐसे चेहरे चमकते हुए देख अन्य आत्माएँ भी सोचती हैं, इन्हों को क्या मिला है ! तो आप क्या जवाब देंगे ? **जो पाना था वो पा लिया**...।"

2. **योगाभ्यास** –

अ. बापदादा से मिलन के दृश्य को याद करें और जैसे साकार में बापदादा के सामने मग्न होकर बैठते हैं, वैसे ही मग्न होकर मिलन मनाएँ...।

ब. सम्पूर्ण स्वरुप और भविष्य देव स्वरुप का नशा -अपने सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरुप को अपने सामने देखें कि वो कितना तेजस्वी है...कितना दिव्य है...सर्व गुणों व शक्तियों से सम्पन्न है...साक्षात् बाप समान है...बस अब मैं भी वैसा बना कि बना...साथ ही अपने देव स्वरुप को भी देखें...जैसे ब्रह्मा बाबा को अपने भविष्य का नशा था, वैसा ही नशा स्वयं को चढ़ायें...कभी फरिश्ता चोला धारण करें तो कभी दैवी चोला...।

स. मैं मास्टर ज्ञान सूर्य, ज्ञान सूर्य से किरणें लेकर सारे विश्व से माया के जर्म्स को नष्ट कर रहा हूँ...।

3. **धारणा – संतुष्टता**

- संतुष्टमणि की चमक सारे संसार में फैलती है...जहाँ संतुष्टता है, वहाँ सर्व शक्तियाँ हैं...इसलिये हर हाल में चाहे जय हो या पराजय, अवसर मिले या ना मिले, महिमा हो या ना हो, हमें संतुष्ट रहना है...।

- शास्त्रों में कहा गया है - `संतोष से बड़ा धन इस संसार में दूसरा नहीं है।`

4. **चिंतन – लिस्ट बनाएँ कि बाबा से हमें –**

- बाप के रुप क्या प्राप्तियाँ हुईं ?
- टीचर के रुप में क्या प्राप्तियाँ हुईं ?
- सद्गुरु के रुप में क्या प्राप्तियाँ हुईं ?

5. **साधकों प्रति** – प्रिय साधकों ! संसार में हलचल बढ़ती जा रही है। माया की हलचल, लोभ के कारण हलचल, समस्याओं के कारण हलचल, मानसिक अशांति और तनाव के कारण हलचल, संबंधों में स्वार्थ के कारण हलचल...ये हलचलें कम नहीं होंगी वरन् दिनों-दिन और ही बढ़ती जायेंगी...ऐसे में हमें अपनी स्थिति को भी अचल बनाना है और दूसरों को भी अचल बनने में मदद करना है, उन्हें श्रेष्ठ वायब्रेशन्स देने हैं...याद रहे, ये काम वही साधक कर सकेंगे **जो व्यर्थ से मुक्त होंगे, जिनका योग श्रेष्ठ होगा और जो पवित्रता की शक्ति में सम्पन्न होंगे।**